International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(4): 49-50

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(4): 49-50
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 11-04-2015
Accepted: 05-05-2015

सतीश प्रताप सिंह
शोधच्छात्र–संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
ॅजपीपदहीणेपदही286 ⁄ हउंपसण्बवउ

Correspondence
इन्दु डिमोलिया
एम. फिल. शोध छात्रा विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय नई दिल्ली–११००६७

मनुस्मृति एवं अर्थशास्त्र में पर्यावरणीय चेतना

सतीश प्रताप सिंह

प्राचीन भारतीय सभ्यता और आध्यात्म का विकास वनों में स्थित ऋषि–आश्रमों के माध्यम से ही हुआ है। भारतीय धर्म संस्कृति और परम्पराओं में पर्यावरण को पर्याप्त महत्त्व दिया गया है।

परि+आ+वृ+ल्युट् से निष्पन्न पर्यावरण पद सभी प्राणियों के चारों ओर विद्यमान वृक्ष जल, वायु, पृथ्वी (भूमि) मानव, पशु, पक्षी आदि के लिए प्रयुक्त होता है। चारों ओर से व्याप्त आवरण को पर्यावरण कहते हैं।

'परितो यदावरण' तत्पर्यावरणम्'

मनुष्य के चारो ओर जो नैसर्गिक आवरण आच्छादन, स्थावर जगमात्मक विद्यमान है वह पर्यावरण कहलाता है।

''परितः सम्यक् वृणोति आच्छादयतीति पर्यावरणम्''

सम्प्रति युग में प्रकृति के साथ सामाजिक अन्तःक्रिया इतनी व्यापक है कि पर्यावरणीय समस्यायें विकराल रुप धारण कर चुकी है।

हमारा पर्यावरण इहलोक, परलोक और द्युलोक तक व्याप्त है। वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण के प्रति जागरूकता प्रदान की गयी है। हमारे प्राचीन ऋषियों ने पर्यावरण और प्रकृति के सभी कारकों ग्रह नक्षत्र, अंतरिक्ष जल, वायु, अग्नि, भूमि, वनस्पति और सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड की स्तुति करते हुए शान्ति की कामना की है–

ऊँ द्यौः। शान्तिरन्तरिक्षं शान्ति।
शान्तिरापः शात्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः।।
शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वशान्तिः।
शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि।।[1]

धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, नारद, स्मृति एवं अर्थशास्त्र आदि में वैदिक मन्तव्यों को ही मान्यता दी गयी है। पर्यावरण असन्तुलन एवं प्रदूषण की जिस समस्या से समग्र विश्व आज ग्रसित है वह मनुष्य द्वारा प्रकृति से छेड़छाड़ का परिणाम है। मनुस्मृति एवं अर्थशास्त्र में ऐसे विधि निषेध प्रतिपादित किये गये है। जिनका पालन यदि किया जाता तो समस्या इतनी विकराल रुप धारण न करती। प्राचीन धर्मशास्त्रकार पर्यावरण के प्रति संवेदनशील थे।

मनुस्मृति में कहा गया है कि ''ब्रह्म ने यज्ञों की सिद्धि के लिए अग्नि से ऋग्वेद वायु से यजुर्वेद सूर्य से सामवेद की सृष्टि की'–

अग्निवायुरविभ्यस् तु त्रयं ब्रह्म सनातनम्।
दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थमृगयजुः सामलक्षणम्।।[2]

यज्ञ पर्यावरण को शुद्ध करते है। यज्ञ की अग्नि में छोड़ी आहुति सूर्य को प्राप्त होती है सूर्य से वृष्टि, वृष्टि से अन्न और अन्न से प्रजाये उत्पन्न होती है।

अग्नौ प्रास्ताऽऽहुतिः सम्यगादित्यमुपदिष्टते।
आदिव्याज् जायते वृष्टिरवृष्टेरन्नं ततः प्रजाः।।[3]

पर्यावरण को शुद्ध रखने में वृक्षों का अतुलनीय योगदान है किन्तु बढ़ती हुई जनसंख्या ने वृक्षों के अस्तित्व पर संकट खड़ा कर दिया है। लोग जमीन के लालच में वृक्षों को काट रहे हैं। जो पर्यावरण के लए घातक है। हमारे यहाँ सिर्फ वृक्ष काटने वालों पर दण्ड विधान है। वृक्ष का विक्रय करने वालों पर नहीं मनु ने वृक्षों को काटने तथा विक्रय करने वाले व्यक्ति को दण्ड का विधान किया है।

वनस्पतीनां सर्वेषामुपभोगो यथायथा।
तथातथा दमः कार्यो हिंसायामिति धारणा।।[4]

अर्थशास्त्रकार ने भी बाग–बगीचों में लगे हुए फलों–फूलों, पत्तों, टहनियों छोटी शाखाओं को काटने पर भी दण्ड का विधान किया है।

पुष्पफलच्छायादगुल्मलतास्वर्धं दण्डः।

अर्थशास्त्रकार ने पर्यावरण के लिए लाभकारी पर्वत, नदी, जंगल आदि के निर्माण के साथ–साथ सेमल,

शमी, बरगद आदि के वृक्ष लगाने का विधान किया है।

नदीशैलवनगृष्टिदरीसेतुबन्धशाल्मली।
शमीक्षीरवृक्षानन्तेषु सीम्नां स्थापयेत्।[5]

मनु ने भी बड़, पीपल, ढाक सेमल, साल, ताड़, गूलर आदि पर्यावरण के लिए उपयोगी वृक्षों को लगाने पर बल दिया है।

सीमा वृक्षांश च कुर्वीतन्यग्रोधाऽश्वत्थकिंशुकान्।
शाल्मलीन् सालतालाश् च क्षीरिणश् चैव पादपान्।।[6]

मनु ने जल प्रदूषण के निवारणार्थ मूत्र–पुरीष, थूक–जूठन, रक्त तथा विष को जल में छोड़ने का निषेध किया है।

नाऽप्सुमूत्रं पुरीषं वाष्ठीवनं वा समुत्सृजेत।
अनेध्ययलिप्तमन्यद्वा लोहितं वा विषाणिव।।[7]

अर्थशास्त्रकार ने वर्षा के जल को संरक्षित करने के लिए बांध एवं जलाशय बनाने के साथ–साथ नये जंगलों के निर्माण पर बल दिया है।

सहोदकमाहार्योदकं वा सेतुं बन्धयेत्।।[8]
एवं द्रव्यद्विपवनं सेतु बन्धमथाकारान्
रक्षेत् पूर्व कृतान्राजा नवाश्चाभिप्रवर्तयेत्।।[9]

अर्थशास्त्रकार ने प्रत्यक्षलाभ के लिए यूकेलिप्टस के पेड़ लगाने का निषेध किया है तथा इसे पर्यावरण का आतंकी घोषित किया है एवं पर्यावरण संतुलन के लिए कृषि में रासायनिक खादों का निषेध किया है तथा अच्छी उपज के लिए भूमि के अनुसार फसल–चक्र अपनाने पर बल दिया है जैसे नदी के कछारों में पेठा, कद्दू, ककड़ी, तरबूज एवं पीपल और ईख बोने के लिए नदी की किनारा जहां से नदी का जल बहकर गया हो उपयुक्त माना है–

फेनाघातो वल्लीफलानाम् परीवाहान्ताः
पिप्पलीमृद्वीकेक्षूणाम् कूपपर्यन्ताः शाकमूलानाम्।[10]

इसके अतिरिक्त रासायनिक खादों के स्थान पर गोबर आदि प्राकृतिक खादों के प्रयोग पर बल दिया है। जिससे की मृदा प्रदूषण कम मात्रा में हो–

मधुघृतसूकरवसाभिः शकृधुक्ताभि, काण्डा बीजानां छेदलेपो मधुघृतेन कन्दानाम्।[11]

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्राकृतिक संतुलन के प्रति मनुस्मृतिकार और अर्थशास्त्रकार दोनों सजग थे। पर्यावरण को संतुलित करने के लिए वृक्षारोपण एक आवश्यक अंग है किन्तु मानव निरन्तर अपनी सुख सुविधा को ध्यान में रखते हुए उन्नति के पथ पर अग्रसर है वह विकास में अवरोध होने पर वृक्षों की अधाधुंध कटाई भूमि की लालच में करता जा रहा है। जिससे सर्वाधिक पर्यावरण अंसतुलन व्याप्त हो गया है। अतः हमें भोगवाद की प्रवृत्ति से ऊपर उठकर प्राकृतिक सम्पदाओं का संरक्षण करना चाहिए मनुस्मृतिकार एवं अर्थशास्त्रकार की दृष्टि अपनाकर पर्यावरणीय संरक्षण में महती भूमिका अदा की जा सकती है नहीं तो वह दिन दूर नहीं है जब हम काल की गर्त में समा जायेगें। अतः कहा जा सकता है।

पर्यावरणस्योपचाराः जीवनास्योपचारः।
सम्यक् जीवन सम्यक् व्यापारः।।

सन्दर्भ–सूची

1. यजुर्वेद–36/7/1
2. मनुस्मृति–1/23
3. मनुस्मृति–3/76
4. मनुस्मृति–8/285
5. कौटिलीय अर्थशास्त्रम्–2/17/1
6. मनुस्मृति–8/246
7. मनुस्मृति–4/56
8. कौटिलीय अर्थशास्त्रम्–2/17/1
9. कौटिलीय अर्थशास्त्रम्–2/17/1
10. कौटिलीय अर्थशास्त्रम्–2/40/24
11. कौटिलीय अर्थशास्त्रम्–2/40/24